IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

ग्वालियर की तबला वादन परम्परा एवं तालों के ठेके एक अध्ययन

डॉ शिवेद्र प्रताप त्रिपाठी(सहायक प्राध्यापक)

गायत्री शोध छात्र

संगीत विभाग दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट डीम्ड यूनिवर्सिटी,

दयालबाग आगरा ।

ग्वालियर एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक संगीत नगरी है। इस नगर की उर्वरा भूमि में न केवल साहित्य और कला के महान कलाकार उत्पन्न हुए हैं, बल्कि महान तथा संसार प्रसिद्ध संगीतज्ञों को भी इसी नगरी में अपनी संगीत साधना करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। ग्वालियर साहित्य, संगीत एवं ललित कलाओ का शताब्दियों से गढ़ रहा है। ग्वालियर के तोमर वंश के राजा मानसिंह भी संगीतज्ञ थे ध्रुपद नामक गायन शैली को प्रचार में लाने का श्रेय राजा मानसिंह को ही जाता है। देश के अनेको प्रसिद्ध गायक–वादक इनके दरबार को सुशोभित करते थे। अपने दरबारी कलाकारों की सहायता से राजा मानसिंह ने 'मान कुतूहल' नामक ग्रन्थ की रचना की। मुगल बादशाह अकबर के दरबारी गायक मियाँ तानसेन की जन्मभूमि ग्वालियर ही है जहाँ प्रत्येक वर्ष संगीत महोत्सव में संगीतकारों का मेला लगता है।

ग्वालियर की पखावज एवं तबला वादन की परम्परा के आद्य संस्थापक पॅ0 जोरावर सिंह जी को माना जाता है जोरावर सिंह जी ग्वालियर के महाराज जनकोजी राव सिंधियां के आश्रित कलाकार थे महाराज उनको बहुत स्नेह करते थे राजस्व के मिलने के कारण वह ग्वालियर में बस गए और जीवन के अंतिम क्षण तक वही रहे इसलिए इनकी परम्परा ग्वालियर परम्परा के नाम से प्रचलित हुई|

वे कुदऊ सिंह के समकालीन एवं उनके मित्र थे। पिछली पाँच छः सदियो से उच्चकोटि के सैंकड़ों तबला–पखावज के कलाकार ग्वालियर में हुए है जिनमें सर्वश्री पंड़ित जोरावर सिंह, सुखदेव सिंह, पंड़ित गणेश उस्ताद उर्फ दानससहाय, पर्वत सिह, माधव सिंह, विजय गोपाल सिंह, जमुना प्रसाद, रामदास पाठक, नारायक प्रसाद, हीरा लाल त्रिपाठी, पंड़ित लल्लू सिंह पंडित बालकृष्ण शर्मा ,श्री कृष्ण पंडित दाताराम रतोनिया, पंडित रामस्वरूप रतोनियान,पंडित रामचंद्र तैलंग ,लालजी प्रभाकर ,रामस्वरूप प्रभाकर, देवेन्द्र कुमार वर्मा नागेश्वेर लाल कर्ण आदि मुख्य हैं।

ग्वालियर की तबला वादन परम्परा को इस शोध कार्य में स्थापित करने का उद्देश्य भी यही है कि इतिहास की इन श्रृंखलाओं को वर्तमान में लिपिबद्ध किया जा सके। यह परम्परायें चार्ट के माध्यम से निम्न प्रकार से दर्शायी गयी हैं।

तबला–पखावज परम्परा

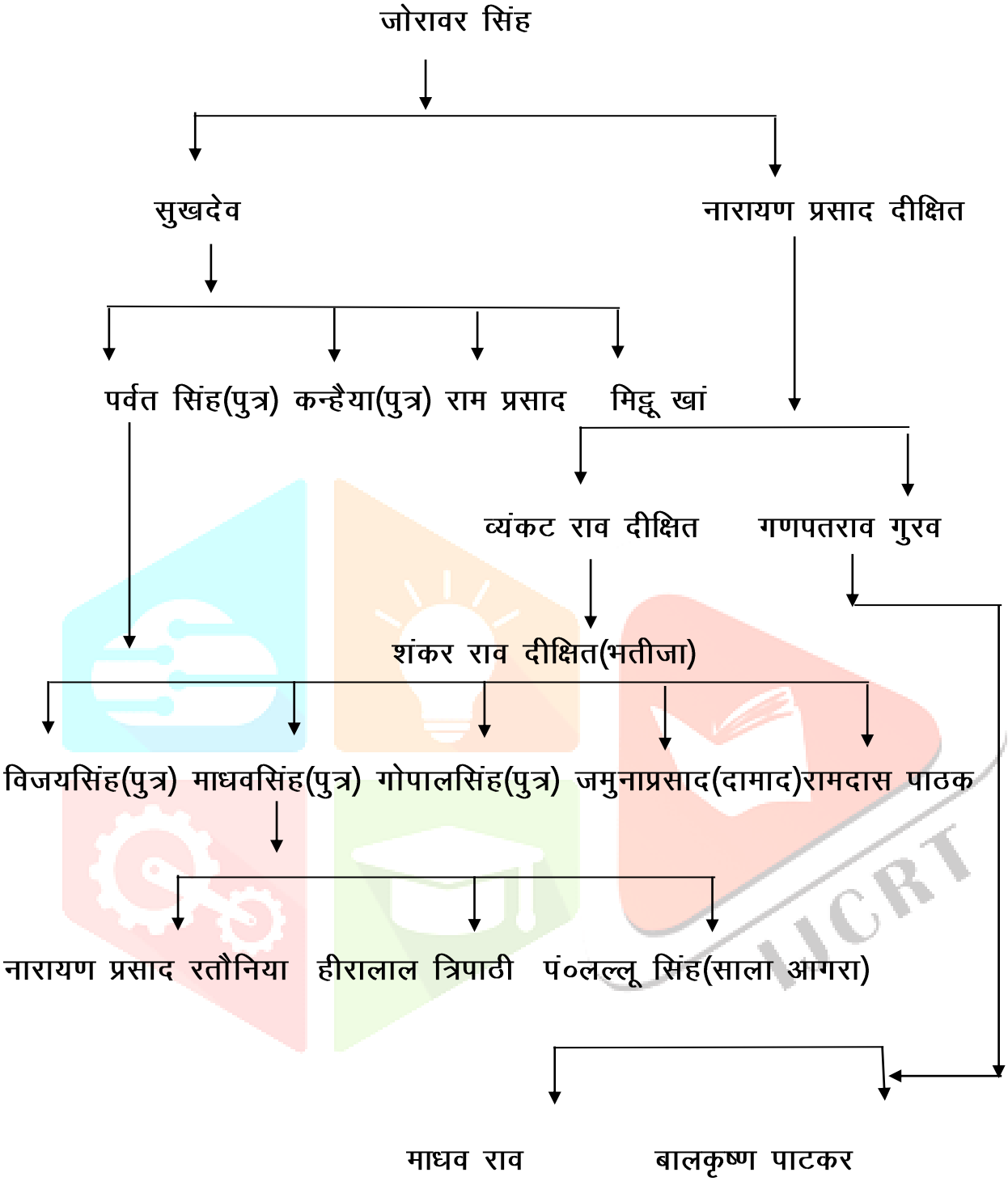

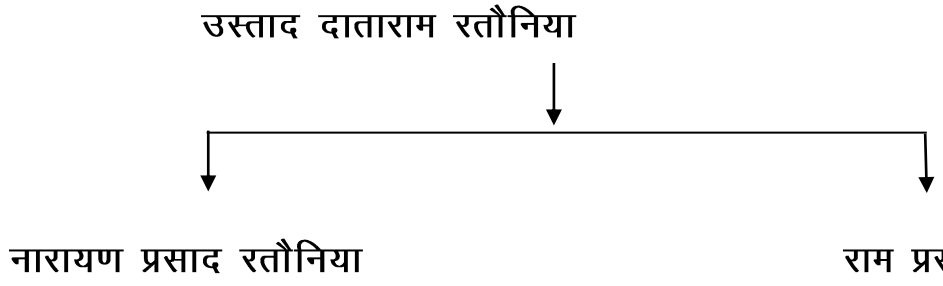

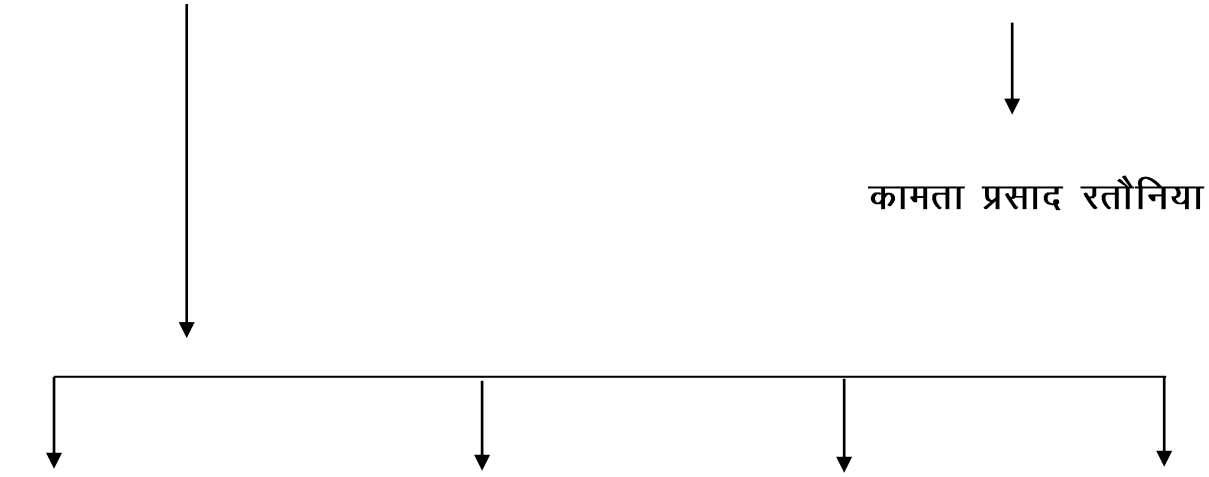

ताल सूलफाक्ता (10 मात्रा)

धी त्रक	दिं ता	तिट धा	तिट कत	गदि गन
×	०	2	3	०

ताल एकताल (12 मात्रा)

धि धि	धागे तिरकिट	तू ना	क त्ता	धागे तिरकिट	धि ना
×	०	2	०	3	4

मोहन ताल (12 मात्रा)

धा	धा धागे	तिट तत ता	तिट कत	गदि गन	तग धेत
×	2	3	4	5	6

ताल रास (13 मात्रा)

धा दिं	ता	किट ता	धा	दिंता	धा किट	तक तिट	तक दिन
×	2	3	4	5	6	7	8

फरोदस्त पंजा ताल (14 मात्रा)

धिं धिं	धागे तिरकिट	तू ना	कत ता	धाति कधी	नधा धाति	कधी नक
×	o	2	o	3	4	5

ताल सादा पंजा (15 मात्रा)

धी त्रक	धि ना	तू ना	कत ता	धागे तिट	तागे तिट	धी ना	धी ना
×	o	2	o	3	o	4	5

पंचम ताल

धा ऽ किट	त क	धुम किट	त क	धा दि गि न
×	2	3	4	5

शंभु ताल (16 मात्रा)

धा त्रक धि ना	धा गदि गन	किट तक	धा कत	तिट कत तिना
×	2	3	o	4

निष्कर्ष

अतः निष्कर्ष रुप से कहा जा सकता है कि ग्वालियर का संगीत और उसको संगीत परम्परा बहुत प्राचीन है। पूर्वकाल समय में यहाँ ध्रुपद नामक गायन शैली का प्रचलन था तथा ध्रुपद के साथ संगत स्वरूप पखावज का प्रयोग होता था तथा पखावज की परम्परायें भी विकसित हो रहीं थीं। समय परिवतन के साथ ग्वालियर में ख्याल नामक गायन शैली जन्म एवं विकास हुआ एवं ग्वालियर ख्याल गायन शली के घराने रूप में प्रसिद्ध हुआ। ख्याल गायन शैली के साथ संगत स्वरूप तबला प्रयोग किया जाने लगा। शनैः शनैः पखावज के विद्वान व कलाकार भी तबले की शिक्षा ग्रहण करने लगे एवं अपने अनेक शिष्य–प्रशिष्य तैयार किये जिससे तबले की परम्परा प्रचलित होने लगी। जिसके फलस्वरूप तबले की परम्परा का सूत्रपात हुआ। ग्वालियर में संगीत की अनेकों परम्परायें पूर्व समय से चली आ रहीं हैं। इन परम्पराओं के कारण ग्वालियर संगीत की नगरी कहा जाने लगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- श्रीवास्तव, आचार्य गिरीश चन्द्र , 1996] तालकोश, रूबी प्रकाशन गुरु तेगबहादुर नगर इलाहाबाद ।
- मिस्त्री ,डॉ. आबान ई,2000] पखावज और तबला के घराने एवं परम्परायें, पंडित के कि० एस० जीजीना स्वर साधना समिति मुम्बई ।
- बांगरे, डॉ अरुण, 1995] ग्वालियर की संगीत परम्परा, कनिष्क पब्लिशर्स अंसारी रोड दरियागंज ।
- तैलंग, कृष्ण नारायण, ग्वालियर घराने की पारंपरिक बंदिशे अप्रचलित राग एवं ताल (बंदिश संग्रह) ।